Abhishek Path (Harajasarayji from Jinendra Archana)

(दोहा)

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमौं जोरि जुगपान।।

परमौदारिक दिव्य देह पावन सही।
क्षुधा तृषा चिन्ता भय गद दूषण नहीं।।
जन्म जरा मृति अरति शोक विस्मय नसैं।
राग रोष निद्रा मद मोह सबैं खसैं।।
श्रम बिना श्रम जलरहित पावन, अमल ज्योति स्वरूप जी।
शरणागतनि की अशुचिता हरि, करत विमल अनूप जी।।
ऐसे प्रभु की शांतमुद्रा को न्हवन जलतैं करैं।
'जस' भक्तिवश मन उक्ति तैं, हम भानु ढिंग दीपक धरैं।।५।।
तुम तो सहज पवित्र यही निश्चय भयो।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो।।
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यौ।
महामलिन तन में वसु विधिवश दुख सह्यौ।।
बीत्यो अनंतो काल यह, मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिताहर एक तुम ही, भरहु वांछा चित ठई।।
अब अष्टकर्म विनाश सब मल, दोष-रागादिक हरौ।
तनरूप कारागेह तैं, उद्धार शिववासा करौ।।६।।

तुम भवदधि तैं तरि गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्ति को, हमैं उतारो पार।।१०।।